अंक
अगस्त, 2022

डिजिटल न्यूजलेटर

पुनर्नवा

आशाओं के दीप.....हौसले का सूरज

बिहार की समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर–विरासत संजोए गए हैं पटना स्थित बिहार संग्रहालय में, इस म्यूजियम को आग व अन्य आपदाओं से पूरी तरह सुरक्षित बनाने की है तैयारी

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

डूबने से होनेवाली मौतों की रोकथाम

त्यौहारों के दौरान नदियों में पवित्र स्नान करने या रोजमर्रे के काम के दौरान तालाबों–गड्ढों–जलाशयों में नहाने, कपड़ा–बर्तन आदि धोने के दौरान कई लोगों की मृत्यु डूबने से हो जाती है। ऐसा भी देखा गया है कि रोमांच के लिए आज के किशोर–किशोरी गहरे पानी में उतर जाते हैं, जो जानलेवा साबित होता है। मोबाइल से सेल्फी फोटो निकालने का प्रचलन नई बीमारी के रूप में सामने है। इसकी वजह से भी डूब कर कुछ युवा काल–कवलित हुए हैं। इन बहुमूल्य जिंदगियों को बचाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना जरूरी है :

क्या करें :

1. बच्चों को नदी–तालाबों, किसी भी जल निकाय में स्नान करने से रोकें।
2. खतरनाक घाटों, गड्ढों आदि की पहचान कर वहां चेतावनी संदेश लगाएं।
3. नदी–तालाब–पोखर में उतरते समय गहराई का ध्यान रखें।
4. डूबते व्यक्ति को धोती, साड़ी, रस्सी या बांस की सहायता से बचाएं। यदि तैरना नहीं जानते हों तो स्वयं पानी में ना जाएं और सहायता के लिए शोर मचाएं।
5. गांव–टोले में डूबने की घटना होने पर आसपास के लोग एकत्रित होकर संवेदनशील स्थानों को चिन्हित करते हुए घटना होने की संभावना पर चर्चा अवश्य करें।
6. डूबते व्यक्ति को बचाने के बाद नाक और मुंह पर उंगलियों के स्पर्श से जांच कर लें कि उसकी सांस चल रही है या नहीं।
7. प्रभावित व्यक्ति खांसने, बोलने, सांस लेने की स्थिति में हो तो उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
8. यदि प्रभावित व्यक्ति का पेट फुला हुआ है तो पूरी संभावना है कि उसने पानी पी लिया होगा, अतः पेट से पानी निकालने की प्रक्रिया शुरू करें।
9. डूबे हुए व्यक्ति को पेट के बल लेटाएं तथा पेट के नीचे तकिया या छोटा बर्तन जो भी उपलब्ध हो उसे लगा दें, इसके बाद पेट के निचले हिस्से पर धीरे–धीरे दबाकर पानी बाहर निकालें।
10. ग्राम पंचायत की सहायता से खतरनाक जगहों–गड्ढों के बारे में लोगों को मंदिर, मस्जिद अन्य सामुदायिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर से जानकारी दें।
11. नदी के नौका परिचालन संबंधी घाटों पर चढ़ते–उतरते समय सावधानी बरतें।

क्या न करें :

1. खतरनाक घाटों के किनारों पर ना जाएं और ना ही बच्चों को जाने दें।
2. खेतों, नदी के किनारों आदि स्थानों पर मिट्टी की खुदाई करके ना छोड़ें।
3. किसी भी गहरे जल निकाय में न उतरें।
4. घर के आस–पास गहराई वाले स्थानों, गड्ढों के पास बच्चों को ना जाने दें।

विषय सूची

		पे.नं.
1	संपादकीय	4
2	माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का संबोधन	5
3	बढ़ रहीं जलवायु परिवर्तन की दुश्वारियां	7
4	आपदाओं से लड़ने को दिव्यांग होंगे तैयार	9
5	दिव्यांगजन संस्थानों में मॉकड्रिल का आयोजन	11
6	आपदाओं के प्रति जागरूक करेंगे नुक्कड़ नाटक	13
7	आग से महफूज होगा बिहार म्यूजियम	14
8	अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम	15
9	मंत्रियों को दी आपदा जोखिम न्यूनीकरण गतिविधियों की जानकारी	16
10	*"इनसे मिलिए"* : मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना	18
11	आपदा प्रबंधन की पुख्ता तैयारियों से लैस होंगे जिले	21
12	एक नजर में अगस्त माह में हुए कार्यक्रमों की झलक	22
13	दुर्गा पूजा पर सुरक्षा हेतु जरूरी सलाह	24

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मासिक डिजिटल न्यूजलेटर पुनर्नवा के अगस्त, 2022 अंक में क्या है खास

पठनीय और रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। आसान भाषा में चीजें समझाई गई है। तस्वीरों का इस्तेमाल ज्यादा किया गया है। आग्रह होगा कि इसे एक बार देखें–पढ़ें और अपने अमूल्य सुझाव अवश्य दें।

अगस्त बारिश का मौसम है। राज्य में इस वर्ष कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे के हालात बने। इस महीने की कवरस्टोरी जलवायु परिवर्तन पर है। संपादकीय में ठनके से होने वाली मौत का मुद्दा उठाया गया है। विगत दो महीने में दर्जनों जानें वज्रपात के कारण गई हैं। थोड़ी जागरूकता से कई जानें बच सकती हैं।

संपादकीय

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो जो कि आफत बन जाए।

संरक्षक मंडल

डॉ. उदय कांत मिश्र, भा.अभि.से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

पी.एन. राय, भा.पु.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा, भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मीनेंद्र कुमार, बि.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

वरीय संपादक : कुलभूषण कुमार गोपाल
सहायक संपादक : संदीप कमल

संपादक मंडल

वरीय सलाहकार : नीरज कुमार सिंह, दिलीप कुमार।
परियोजना पदाधिकारी : डॉ. जीवन कुमार, अशोक कुमार शर्मा, प्रवीण कुमार।
आई.टी. : सुश्री सुम्बुल अफरोज, मनोज कुमार

ई.मेल.: sr.editor@bsdma.org
वेबसाइटः www.bsdma.org
सोशल मीडिया :
www.facebook.com/bsdma

नोटः– पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखक द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

ठनके का कहर

जलवायु परिवर्तन का ही असर है कि बिहार में ठनका एक बड़ी आपदा के रूप में सामने आया है। राज्य में बीते जुलाई और अगस्त महीने में वज्रपात की घटनाओं में दर्जनों लोगों की मौत हो गई। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आपदाओं की रोकथाम और आपदापीड़ितों के राहत व बचाव को लेकर हमेशा गंभीर रहते हैं। वज्रपात से हुई मौतों पर गहरा शोक व्यक्त करते व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। साथ ही सभी मृतक के परिजनों को तत्काल 4–4 लाख रुपये अनुग्रह अनुदान देने के आदेश भी दिए। मुख्यमंत्री ने अपील की कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम में घरों में रहें और सुरक्षित रहें। हालांकि यह भी सच है कि वज्रपात से होने वाली मौतें पहले सरकारी आंकड़ों में सही–सही दर्ज नहीं हो पाती थीं। आपदापीड़ितों को राहत पहुंचाने के लिए कृतसंकल्पित राज्य सरकार ने जब फौरी तौर पर मुआवजे की घोषणा की तो ऐसे मामले ज्यादा संख्या में सामने आने लगे। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य भर में वज्रपात से बचाव के लिए जागरूकता अभियान चला रहा है। इसके तहत हर जिले में जागरूकता रथ रवाना किए जा रहे हैं। ग्रामीणों के बीच प्रचार सामग्री वितरित की जा रही है। सरकारी भवनों में तड़ित चालक स्थापित करने पर जोर दिया जा रहा है। हर पंचायत में हूटर लगाने की योजना पर काम किया जा रहा है। आपदाओं से बचाव में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल सबसे कारगर साबित हो सकता है। आज गांव–गांव में प्रायः हर हाथ में मोबाइल नजर आता है। संचार माध्यमों से मौसम की सही जानकारी प्राप्त कर इस आपदा से बचा जा सकता है। बिहार सरकार ने एक विशेष ऐप खास तौर पर वज्रपात से बचाव के लिए बनाया है। इंद्रवज्र ऐप बिजली गिरने की बिल्कुल सटीक जानकारी देता है। आपको समय रहते सतर्क और सचेत करता है। काम के इस ऐप को ज्यादा से ज्यादा लोग डाउनलोड कर इसकी मदद से अपनी और अपने आसपास के लोगों की जान बचा सकते हैं। आइए, फिर देरी किस बात की, फटाफट इसे अपने मोबाइल में कैद करें। जान है तो जहान है.....!!

76वें स्वतंत्रता दिवस पर माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का संबोधन

बाढ़ हो या सुखाड़, आपदापीड़ितों को हरसंभव सहायता

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि हमारा शुरू से ही संकल्प है कि राज्य के खजाने पर आपदापीड़ितों का पहला अधिकार है। यहाँ हर आपदा पीड़ित को सहायता दी जाती है, चाहे सुखाड़ हो या बाढ़ हो। आपदा की स्थिति से निपटने के लिए विद्यालयों में कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसमें बच्चों को भूकम्प से बचने के लिए मॉकड्रिल तथा अन्य माध्यम से आपदाओं से निबटने के विषय में बताया जा रहा है। बड़ी संख्या में बच्चों के डूबने की घटनाओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों को तैरना सिखाया जा रहा है। साथ ही दिव्यांग बच्चों को आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है। 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार गांधी मैदान में झण्डोत्तोलन के बाद प्रदेशवासियों को संबोधित कर रहे थे।

15 अगस्त को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार गांधी मैदान में झण्डोत्तोलन के बाद प्रदेशवासियों को संबोधित करते हुए।

सूखे की स्थिति : मुख्यमंत्री ने कहा कि मानसून की बेरूखी के कारण सूखे की स्थिति हुई है। जुलाई माह में पूरे राज्य में औसत वर्षापात से 60 प्रतिशत कम वर्षा हुई जिसके कारण सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई और जिससे फसलों की रोपनी समय पर नहीं हो सकी। 1 जून से 14 अगस्त तक औसत वर्षापात में 39 प्रतिशत की कमी हुई है जिससे धान रोपणी 80 प्रतिशत ही हो पायी है। सूखे की स्थिति से

निपटने के लिए किसानों को बिचड़ा एवं फसलों की सिंचाई हेतु डीजल अनुदान 60 रुपये प्रति लीटर से बढ़ाकर 75 रुपये प्रति लीटर दिया जा रहा है। डीजल अनुदान के लिए अभी तक लगभग 1 लाख 2 हजार आवेदन प्राप्त हुये हैं, जिसमें से 48 हजार 506 आवेदनों का सत्यापन हो गया है तथा 11 हजार 243 किसानों को डीजल अनुदान दिया जा चुका है, आगे सभी इच्छुक लोगों को इसका भुगतान किया जायेगा।

कोरोना : पूरा विश्व कोरोना महामारी से प्रभावित रहा है। इस वर्ष की शुरूआत से ही कोरोना के मामले बीच–बीच में घटते–बढ़ते रहे हैं। अभी भी कोरोना के 798 एक्टिव मामले हैं। कोरोना की जाँच एवं इलाज की ठोस व्यवस्था की गयी है। प्रारंभ से ही कोरोना जाँच पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि कोरोना संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। अभी भी प्रतिदिन लगभग 1 लाख जाँच की जा रही है। हर जिले में आर0टी0पी0सी0आर0 जाँच की व्यवस्था कर दी गयी है। 14 अगस्त तक बिहार में प्रति 10 लाख जनसंख्या पर 7 लाख 39 हजार से अधिक जांच हुई है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 6 लाख 38 हजार है। मार्च, 2021 से ही कोविड–19 टीकाकरण का कार्य तेजी से जारी है। इसमें प्रथम खुराक, द्वितीय खुराक एवं प्रिकॉशनरी डोज को मिलाकर 14 करोड़ 75 लाख से अधिक कोरोना के टीके दिये जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि संकट की घड़ी में राज्य सरकार लोगों के साथ रही है तथा लोगों को हर संभव सहायता एवं सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मृतक के आश्रितों को शुरू से ही 4 लाख रुपये अनुदान दिया जा रहा है। केन्द्र सरकार के निर्णय के उपरान्त 50 हजार रूपये की अतिरिक्त मदद भी दी जा रही है। अब तक कुल 12 हजार 996 मृतकों के आश्रितों को 584.82 करोड़ रूपये का भुगतान हो चुका है।

डायल 112 : आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए डायल 112 की इमरजेंसी सेवा प्रारंभ की गयी है। इसके तहत अपराध की घटना, आगजनी, वाहन दुर्घटना, मेडिकल इमरजेंसी आदि की सूचना पटना स्थित कॉल सेंटर में आने पर तत्काल पुलिस सहायता एवं आवश्यकतानुसार फायर ब्रिगेड एवं एम्बुलेंस की सहायता भी पहुँचायी जाती है।

भूकम्परोधी भवन : राज्य में ऐसे भवनों का निर्माण किया है जिनका भवन निर्माण और वास्तुकला की दृष्टि से विशेष महत्व है। पटना में अंतर्राष्ट्रीय मानक के बिहार म्यूजियम का निर्माण कराया गया है। पटना म्यूजियम का भी विस्तार किया जा रहा है। दोनों म्यूजियम को भूमिगत मार्ग से जोड़ने की योजना पर काम शुरू हो चुका है। सरदार पटेल भवन का निर्माण कराया गया है। यह भूकम्परोधी भवन है, जो 9 रिक्टर स्केल की तीव्रता वाले भूकम्प के झटके को सह सकता है।

जल–जीवन–हरियाली : इस अभियान के सभी 11 अवयवों पर काम चल रहा है। हमें जल की रक्षा एवं हरियाली की रक्षा करनी होगी तभी जीवन की रक्षा हो सकेगी चाहे वो मनुष्य हो, पशु–पक्षी हो या जीव–जन्तु। जल संरक्षण के लिए पूरी तौर पर काम चल रहा है। राज्य में पौधारोपण एवं हरित आवरण बढ़ाने पर हमारा शुरू से जोर रहा है। बिहार विभाजन के उपरान्त राज्य में हरित आवरण मात्र 9 प्रतिशत रह गया था, अब वह लगभग 15 प्रतिशत हो गया है। हम चाहते हैं कि हरित आवरण कम से कम 17 प्रतिशत हो, जितना संभव हो सकेगा उतना हरित आवरण बढ़ाया जाएगा। **(स्रोत : आईपीआरडी)**

बढ़ रहीं जलवायु परिवर्तन की दुश्वारियां

शहर पानी–पानी, गांव सूखे, खेती–किसानी पर संकट, खाद्य सुरक्षा पर सवाल

–संदीप कमल–

जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) की दुश्वारियों का जनजीवन पर गहरा असर अब साफ दिखाई पड़ने लगा है। बिहार की बात करें तो आज यह बाढ़ और सुखाड़ दोनों ही मोर्चे पर एक साथ लड़ रहा है। धरती प्यासी रही, फसलें मारी गईं और नदियां उफन रहीं, किनारे डूबे हैं। राजस्थान की गलियों में झरने से भी तेज पानी के बहाव में साथ बह रहे युवक और बाइक की तस्वीर डराती है। यकायक भोपाल का बड़ा तालाब समुद्र सरीखा रौद्र रूप धारण कर लेता है। बेंगलुरू की सड़कें नदियां बन जाती हैं। देश में असमान बारिश का नतीजा रहा कि पश्चिम और दक्षिण के राज्य जहां पानी–पानी हो गए, वहीं पूर्व और उत्तर के राज्यों में सूखे के हालात पैदा हो गए। कहीं बेतहाशा गर्मी, कहीं अत्यधिक बारिश तो कभी हाड़ कांपती ठंड से जनजीवन बेहाल है।

पर्यावरण, पारिस्थितिकी पर खतरा मंडरा रहा है। सबसे ज्यादा प्रभावित कृषि हुई है। खेती–किसानी पर संकट गहरा है। चौतरफा है। खाद्य सुरक्षा पर सवाल खड़े हो रहे हैं। बड़ी आबादी प्यासी है। रोजी–रोटी प्रभावित हो रही। विस्थापन सुरसा की भांति मुंह बाये खड़ा है। शहरों का दम घुट रहा। तमाम आधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल के बावजूद मौसम की सटीक भविष्यवाणियां संभव नहीं हो पा रही।

लिहाजा बारिश हो या आंधी और तूफान, इसका आक्रामक रूप हर साल हमारे सामने आ रहा। इससे जान–माल का काफी नुकसान हो रहा और यह सार्वभौम सत्य है कि आपदाओं की सबसे ज्यादा मार गरीब तबके को ही झेलनी पड़ती है। हमारी बेहिसाब लापरवाहियों और दखलंदाजियों ने रही–सही कसर पूरी कर दी है।

बारिश कहीं इतनी अधिक हो रही कि बाढ़ कहर बनकर टूट रही। कहीं मॉनसून की दगाबाजी से सूखे के हालात पैदा हो रहे हैं। दोनों ही परिस्थितियों में खेती–किसानी चौपट हो रही। इसका असर महंगाई और अंततः खाद्य सुरक्षा पर पड़ना लाजिमी है। कुल जमीन का 65 फीसदी हिस्सा सिंचाई के लिए मॉनसून पर निर्भर है। साधारण किसान आसमान की ओर टकटकी लगाए रहता है। इधर, प्यासी धरती के अंदर का पानी भी पाताल जा रहा। भूजल के गिरते स्तर से कृषि कार्य प्रभावित हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते चावल और गेहूं जैसी मुख्य फसलों की पैदावार तो प्रभावित हुई ही है, इनमें मौजूद पोषक तत्वों में भी भारी गिरावट देखने को मिल रही है। फसल चौपट होने का सबसे बुरा असर शहरी गरीब परिवारों पर पड़ता है जिसकी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा भोजन की जुगाड़ में चला जाता है।

:: गहन अध्ययन और शोध की जरूरत::

जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभावों पर तत्काल गहन अध्ययन और शोध की जरूरत है। निवाला हर थाली में हो, गरीब कोई भूखा न सोए, इसके लिए कृषि पैदावार का उच्चतर लक्ष्य हासिल करना बड़ी चुनौती है। जाहिर तौर पर किसानों को नए तौर–तरीकों से लैस करना होगा। उपोष्ण और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में, जहां गर्मी अधिक पड़ती है, वहां चावल की उपज कैसे बढ़ाई जाए, इस पर वैज्ञानिकों को मंथन करना होगा। कम पानी में भी तापमान बर्दाश्त करने वाले पौधे विकसित करने होंगे। रासायनिक खादों पर निर्भरता कम करनी होगी। जैविक खाद के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तन से निपटने का सबसे कारगर तरीका यही होगा कि तात्कालिक तौर तरीकों के बजाय हम दीर्घकालिक उपाय अपनाएं। फौरी राहत और मुआवजा बांटकर इस बड़ी लड़ाई का सामना नहीं किया जा सकता। यह लड़ाई विश्व स्तर पर लड़ी जानी है और इसके लिए सबसे पहले देश को एकजुट होना होगा। आधुनिक युग में कोई भी युद्ध बगैर तकनीक के इस्तेमाल के नहीं जीती जा सकती। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और क्वांटम कंप्यूटर का प्रयोग जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने में कारगर सिद्ध हो सकता है। (स्रोत साभार : ओआरएफ.ओआरजी)

आपदाओं से लड़ने को दिव्यांग होंगे तैयार

- दिव्यांगों के लिए आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने हेतु कार्यशाला
- प्राधिकरण हौसले और हुनर से लैस करेगा दिव्यांग बच्चों और शिक्षकों को
- प्रशिक्षण मॉडयूल तैयार करेगी विशेषज्ञों की कमेटी, 30 सितंबर देगी रिपोर्ट

आपदाओं से राज्य में हर साल जान–माल का काफी नुकसान होता है। दिव्यांगजन इससे अछूते नहीं। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपने तई लड़ने और बचने का भरसक प्रयास करता है, लेकिन दिव्यांगजन कई बार खुद को विवशताओं से घिरे पाते हैं। दिव्यांगों को संकट की इस स्थिति से निकालने और आपदाओं से लड़ने को तैयार करने का बीड़ा बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने उठाया है। शुरुआत विशेष बच्चों से होगी और इसके लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया जाएगा। दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने के लिए 11 अगस्त को प्राधिकरण सभागार में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, फायर ब्रिगेड, यूनिसेफ, दृष्टिहीन व मूक–बधिर विद्यालयों और स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला में मौजूद सभी सहभागियों ने पांच–पांच दिव्यांग बच्चों को गोद लेने की शपथ ली।

11 अगस्त को प्राधिकरण सभागार में दिव्यांगों पर हुई कार्यशाला में विचार रखते प्रतिभागी।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत मिश्र ने कहा कि दिव्यांगजनों की सीमाओं को नहीं उनकी विशिष्टताओं को हमें देखना चाहिए। अच्छाइयों को बार–बार उभारिए, तराशिए ताकि बुराइयां खुद–ब–खुद खत्म हो जाए। उनके लिए हमें एक ऐसा माहौल, ऐसी दुनिया बनानी होगी, जहां वह खुद को सुरक्षित और सुखद महसूस करें।

तकनीकी के इस युग में यह संभव है। आपदाओं से उन्हें बचाने, उन्हें इसके लिए तैयार करने के लिए सबसे पहले उनकी जरूरतों और विशेषताओं को जानने की जरूरत है। फिर उसी अनुरूप शिक्षकों और प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण का जो भी मॉड्यूल हम तैयार करें, वह व्यावहारिक, उपयोगी और आसानी से करने योग्य हो। इस मौके पर प्राधिकरण के सदस्य श्री पीएन राय भा.पु.से. (सेनि) ने कहा कि दिव्यांगजनों को आपदा से बचाने के लिए जरूरी है कि हम सबसे पहले उनके प्रति संवेदनशील हों। अगर उनके प्रति हम संवेदनशील नहीं हैं, तो हमारी यह मुहिम कभी सफल नहीं होगी। आपदाओं से लड़ने के लिए हम शिक्षकों को प्रशिक्षण देंगे। वे फिर बच्चों को प्रशिक्षण देंगे, उन्हें जागरूक करेंगे। दिव्यांगों में हर तरह के बच्चे होंगे। मूक–बधिर, दृष्टिहीन, मानसिक–शारीरिक रूप से कमजोर बच्चे होंगे। सभी का ख्याल रखना होगा। अलग–अलग दिव्यांग बच्चों के लिए हमें प्रशिक्षण मॉड्यूल अलग अलग बनाना होगा। बच्चों से संवाद का तरीका भी अलग–अलग होगा। इसके लिए जरूरी है कि ड्राफ्टिंग कमेटी में दिव्यांगता की अलग–अलग श्रेणी के अलग–अलग प्रतिनिधि रखे जाएं।

कार्यशाला में उभरे विचार

- दिव्यांगजनों के प्रति संवेदना और जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक व मॉक ड्रिल का हो आयोजन
- दिव्यांगों को ही सिर्फ प्रशिक्षित ना किया जाए, उनके परिवार, समाज और संस्थाओं को भी प्रशिक्षित करने की जरूरत है। सबके लिए अलग–अलग प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाना चाहिए।
- नेत्रहीन बच्चे आपदा में कैसे व्यवहार करें, यह उन्हें उनकी भाषा में बताना होगा। सभी तरह के बच्चों को सभी तरह की आपदाओं से लड़ने के लिए तैयार करना होगा।
- सहायता सामग्री, बुकलेट, वीडियो, पंफलेट और मॉक ड्रिल के जरिए प्रशिक्षण बच्चों और शिक्षकों को दिया जाएगा।
- मूक–बधिर बच्चों को प्रकाश.रोशनी के जरिए प्रशिक्षित करना होगा। लाल, हरा, पीला का मतलब उन्हें बताना होगा।
- विद्यालयों और स्वयंसेवी संस्थाओं में आपदा प्रबंधन से लडने के विशेषज्ञ और शिक्षक नियुक्त करने होंगे।

ट्रेनिंग मॉड्यूल ड्राफ्टिंग कमेटी गठित

दिव्यांगजनों को आपदा से बचाने के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने के उद्देश्य से एक ड्राफ्टिंग कमेटी का गठन किया गया। एसडीआरएफ के सेकेंड इन कमांडेंट केके झा इस कमेटी के चेयरमैन होंगे। आपदा प्राधिकरण के वरीय संपादक कुलभूषण इसके समन्वयक बनाए गए। इसमें बतौर सदस्य एनडीआरएफ, फायर ब्रिगेड, विभिन्न स्कूलों और स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को रखा गया है। 30 सितंबर तक कमेटी रिपोर्ट दे देगी।

स्कूलों में होगी मॉक ड्रिल

कार्यशाला के दौरान आपदाओं को लेकर दिव्यांग बच्चों को जागरूक करने पर सहमति बनी। इसके लिए एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और फायर ब्रिगेड की अलग–अलग टीमें राजधानी पटना के स्कूलों मे मॉक ड्रिल की शुरुआत करेंगी। इसमें बच्चों को आपदाओं की जानकारी दी जाएगी। आपदा के वक्त उन्हें क्या करना चाहिए, किन चीजों से बचना चाहिए, यह बताया जाएगा। मूक–बधिर, नेत्रहीन विद्यालयों व संस्थाओं में चलनेवाले इस व्यावहारिक अभ्यास प्रशिक्षण में शिक्षकगण भी शामिल होंगे।

दिव्यांगजन संस्थानों में मॉकड्रिल का आयोजन

मॉकड्रिल में शामिल दिव्यांग छात्र–छात्राएं, शिक्षक व प्रशिक्षक।

राजधानी पटना के चार दिव्यांगजन संस्थानों में मॉकड्रिल कर छात्रों और शिक्षकों को आपदाओं से निपटने की जानकारी दी गयी। एसडीआरएफ और राज्य अग्निशमन सेवाएं द्वारा 18 अगस्त, 2022 को मूक–बधिर बालिका विद्यालय, गायघाट और मूक–बधिर बालक विद्यालय, महेंद्रु में आयोजित मॉकड्रिल में दोनों स्कूलों के 50 छात्र–छात्राओं समेत एक दर्जन से अधिक शिक्षक शामिल हुए। शिक्षकों और मूक–बधिर छात्र–छात्राओं को भूकंप, अगलगी, वज्रपात और सर्पदंश से सुरक्षा की जानकारी दी गयी। उन्हें मॉकड्रिल में शामिल कर इन आपदाओं से खुद को बचाने का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। राज्य में पहली बार दिव्यांगजनों के लिए आयोजित इस मॉकड्रिल में बचाव की जानकारी प्राप्त करनेवाले बच्चे ही नहीं शिक्षक भी हैरान थे कि इन विशेष बच्चों को भी आपदाओं से बचाव के लिए सरकार चिंतित है। भूकंप के दौरान कैसे अपने को सुरक्षित रखना है, इस मॉकड्रिल में शामिल बच्चे पूछताछ के क्रम में एसडीआरएफ के प्रशिक्षकों के सवालों को एक कदम आगे बढ़कर जवाब दे रहे थे। छात्रों और शिक्षकों ने एक स्वर में कहा कि आनेवाली किसी भी प्रकार की आपदा में अब सुरक्षित रहा जा सकता है। मॉकड्रिल में प्राधिकरण के सीनियर कंसल्टेंट श्री नीरज कुमार और परियोजना पदाधिकारी श्री प्रवीण कुमार ने अपने संबोधन में आपदा से निपटने में मॉकड्रिल की आवश्यकता की जानकारी दी।

मूक–बधिर बालिका विद्यालय, गायघाट, मूक–बधिर बालक विद्यालय, महेंद्रु, जेएम इंस्टीच्यूट और अंतर्ज्योति दृष्टिहीन बालिका विद्यालय में मॉकड्रिल

इसी तरह 20 अगस्त को इंद्रपुरी, पटना स्थित जेएम इंस्टीच्यूट में मॉकड्रिल का आयोजन किया गया। यहां मूक–बधिर के साथ–साथ मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों को आपदा से बचाव की जानकारी दी गयी। यहां 50 से अधिक दिव्यांग बच्चे और एक दर्जन शिक्षक–शिक्षिकाओं ने आपदा में बचाव की

जानकारी ली। मूक–बधिर बच्चों ने मॉकड्रिल में बचाव की जानकारी प्राप्त करने के बाद उसे दुहराकर प्रशिक्षकों को चकित कर दिया जबकि मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों पर इसका कम असर देखा गया।

पुनः 22 अगस्त, 2022 को कुम्हरार, पटना स्थित अंतर्ज्योति दृष्टिहीन बालिका विद्यालय में मॉकड्रिल का आयोजन किया गया। इस मॉकड्रिल में 80 दृष्टिहीन बालिकाओं और शिक्षक –शिक्षिकाओं की भागीदारी हुई। उन्हें भूकंप की जानकारी और इस दौरान बचाव के तरीके, वज्रपात की स्थिति में बचने के उपाय और अगलगी में क्या करें –क्या न करें की जानकारी दी गयी। सर्पदंश से बचने के उपायों और सांप काटने की स्थिति में क्या करना है, यह बताया गया। आपदाओं में घायलों की मदद करने और सुरक्षित जगहों तक उन्हें पहुंचाने की जानकारी भी दी गयी। मॉकड्रिल में सीनियर कंसल्टेंट श्री नीरज कुमार ने दृष्टिहीन बच्चियों को आपदाओं की पहचान करने और बचने की कई सरल जानकारी दी।

दिव्यांगजनों को प्राकृतिक अथवा मानवजनित आपदाओं से बचाने के लिए और उन्हें इसके लिए पूरी तरह तैयार करने के उद्देश्य से प्राधिकरण एक बहुत महत्वाकांक्षी कार्यक्रम पर काम कर रहा है। इसके तहत पहले दिव्यांग स्कूल के बच्चों को और उनके शिक्षकों–प्रशिक्षकों को ट्रेनिंग देने की जरूरत है। प्राधिकरण लगातार इस दिशा में प्रयासरत है

आपदाओं के प्रति जागरूक करेंगे नुक्कड़ नाटक

रंगकर्मियों, लेखकों और कलाप्रेमियों की बैठक में स्क्रिप्ट लेखन का प्रारूप तय

संवाद और संचार की जब बात होती है, तो दृश्य माध्यम इसका सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है। नाट्य शैली हमारी प्राचीन कला परंपरा का अटूट हिस्सा रही है। इसके जरिये एक व्यापक समूह वर्ग में अपनी बातें सही तरीके से पहुंचाई जा सकती है। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नुक्कड़ नाटकों के जरिये लोगों को आपदाओं के प्रति जागरूक करेगा। विभिन्न आपदाओं के लिए अलग–अलग नाटक लिखे जाएंगे और इनका मंचन पूरे राज्य में होगा। नाटक का संदेश ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे, इसके लिए मैथिली, अंगिका, भोजपुरी, मगही आदि भाषाओं में स्क्रिप्ट लिखे जाएंगे। स्क्रिप्ट लेखन का प्रारूप तय करने को लेकर 12 अगस्त को प्राधिकरण सभागार में रंगकर्मियों, लेखकों और कलाप्रेमियों की एक बैठक हुई। बैठक को संबोधित करते हुए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र ने कहा कि नुक्कड़ नाटक 15 मिनट

से ज्यादा का नहीं होना चाहिए। स्क्रिप्ट लेखन में नाटक की संप्रेषणीयता सबसे महत्वपूर्ण है। एक अनपढ़ व्यक्ति भी इसे आसानी से समझ सके, इसमें छुपे संदेश को ग्रहण कर सके। यह सामान्य, सपाट ना हो। पांच–पांच मिनट के तीन उतार–चढ़ाव (पीक) होने चाहिए।

इस मौके पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री पी एन राय ने कहा कि स्क्रिप्ट बढ़िया होने चाहिए। नुक्कड़ नाटकों के लिए गांव–गांव में टीम जाएगी। सहज संवाद की शैली में यह लिखा जाना चाहिए। बैठक में तय किया गया कि लेखकों, रंगकर्मियों की कार्यशाला आगामी 5 से 9 सितंबर के बीच प्राधिकरण सभागार में होगी। इसमें स्क्रिप्ट लेखन को अंतिम रूप दे दिया जाएगा। श्रीकांत व्यास, अनीश अंकुर, जयप्रकाश आदि इस बैठक में मौजूद रहे।

आग से महफूज होगा बिहार म्यूजियम

- प्राधिकरण और बिहार अग्निशमन सेवा के बैनर तले मॉक ड्रिल का आयोजन
- संग्रहालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और सुरक्षाकर्मियों को आग से बचाव की दी जानकारी
- विशेषज्ञों द्वारा 16 बिंदुओं पर पूरे संग्रहालय परिसर की फायर सेफ्टी ऑडिट भी की जाएगी

बिहार समृद्ध ऐतिहासिक धरोहरों की धरती है। राजधानी पटना स्थित बिहार म्यूजियम में संरक्षित अनूठी कलाकृतियां और विलक्षण पुरातात्विक अवशेष इसके गवाह हैं। इस म्यूजियम को आपदाओं से पूरी तरह सुरक्षित रखने के उद्देश्य से 26 अगस्त को यहां फायर सेफ्टी मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और बिहार अग्निशमन सेवा के विशेषज्ञों ने संग्रहालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और सुरक्षाकर्मियों को आग से बचाव की जानकारी दी। अग्निशमन सेवा के विशेषज्ञ पूरे म्यूजियम की 16 बिंदुओं पर फायर ऑडिट भी करेंगे। इसमें एक–एक चीज की सूक्ष्मता और गहनता से जांच की जाएगी। संग्रहालय को आग से अभेद्य बनाने में यह सहायक साबित होगा।

अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए बिहार संग्रहालय के महानिदेशक राज्य के पूर्व मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि जापान के आर्किटेक्ट माकी ने संग्रहालय को डिजाइन किया है। यहां सुरक्षा के तमाम आधुनिक उपकरण व उपाय मौजूद हैं। लेकिन इस संग्रहालय में रखी गई कलाकृतियों और अवशेषों की सुरक्षा को लेकर हमेशा सतर्क और सचेत रहने की जरूरत है। ये धरोहर हैं। हमारी अमूल्य विरासत। आपदा की स्थिति में क्या करना है, क्या नहीं करना है, हरेक व्यक्ति को यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। ऐसे हालात में एक टीम के रूप में हमें प्रतिक्रिया देनी है।

इस मौके पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र ने कहा कि आपदाओं में हम कैसे व्यवहार करें, यह हमारे मन–मस्तिष्क में बिल्कुल गहराई तक बैठा होना चाहिए। ठीक उसी तरह, जैसे दफ्तर से घर जाते वक्त हम ज्यादा सोचते नही, हमारे कदम या हमारे वाहन उसी दिशा में

चल पड़ते हैं, जिधर घर है। खाना खा रहे हो तो हाथ को पता होता है कि मुंह कहां है। इसी तरह आपदा की घड़ी में हमें क्या करना है, यह बिल्कुल हमारे मन के अंदर बैठा होना चाहिए। हमारे स्वभाव का यह हिस्सा बन जाना चाहिए। इस विश्वस्तरीय संग्रहालय में तमाम आधुनिक व्यवस्था है। आज की स्थिति में कैसे हम सुरक्षित रहें, यहां आनेवाले दर्शकों को सुरक्षित रखें, उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि यहां रखी गई तमाम कलाकृतियों और पुरातात्विक अवशेषों की चीजों को कैसे महफूज रखा जाए? वॉटर कर्टेन, फायर बॉल जैसी नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल हम आग से लड़ने के लिए कर सकते हैं। डॉ मिश्र ने बताया कि कैसे प्राधिकरण ने राज्य के अस्पतालों को आग से सुरक्षित रखने का बीड़ा उठाया। बिहार अग्निशमन सेवा के सहयोग से सरकारी और निजी अस्पतालों में इस कार्य को बखूबी अंजाम दिया जा रहा है। इस अवसर पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्यद्वय श्री पीएन राय और मनीष कुमार वर्मा, बिहार अग्निशमन सेवा के डीआईजी विकास कुमार और एसपी श्री राजीव रंजन भी मौजूद थे। सत्र का संचालन प्राधिकरण के वरीय सलाहकार दिलीप कुमार ने किया।

क्या बताया गया फायर मॉक ड्रिल में

फायर मॉक ड्रिल के दौरान अग्नि सुरक्षा का महत्व बताया गया। संग्रहालय जैसी सार्वजनिक जगहों पर आग लगने की स्थिति में अलार्म या शोर करने की जरूरत नहीं है। इससे भगदड़ मच सकती है। ऐसी स्थिति में एक विशेष कोड बनाया जाना चाहिए। यहां के तमाम सुरक्षाकर्मी को इस विशेष कोड की जानकारी होनी चाहिए। उस कोड का इस्तेमाल करते हुए पहले दर्शकों को बाहर निकालने का काम करें। अग्निशमन विभाग को सूचित करें। कलाकृतियों की सुरक्षा को ध्यान में रखें। आग बुझाने वाले यंत्र कहां रखे हैं और इसे किस तरह चलाना है, इसकी जानकारी यहां के सभी कर्मचारियों–अधिकारियों को होनी चाहिए। निकास का रास्ता किधर है, पता होना चाहिए। वहां अंधेरे में भी दिखनेवाले साइनेज लगे होने चाहिए। खराब बिजली उपकरणों की तमाम तत्काल मरम्मत होनी चाहिए।

अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम

'अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत '16 बिंदु अग्नि प्रवणता सूचकांक' के आधार पर अगस्त माह में राज्य के कुल 201 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया जिसमें 6 सरकारी एवं 195 निजी अस्पताल शामिल हैं। इन अस्पतालों का निरीक्षण प्राधिकरण के दिशा निर्देश में अग्निशाम सेवाएं के अधिकारियों द्वारा किया गया। इस प्रकार राज्य के अब तक कुल 5,610 अस्पतालों का अग्नि प्रवणता सूचकांक के आधार पर निरीक्षण किया जा चुका है।

मंत्रियों को दी आपदा जोखिम न्यूनीकरण गतिविधियों की जानकारी

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का शिष्टमंडल माननीय आपदा प्रबंधन मंत्री से शिष्टाचार भेंट करते हुए।

बिहार सरकार के नवनियुक्त माननीय मंत्रियों को शिष्टाचार मुलाकात के दौरान आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी दी गयी।

23 अगस्त, 2022 को आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के शिष्टमंडल ने माननीय मंत्री, आपदा प्रबंधन विभाग, श्री शाहनवाज से शिष्टाचार मुलाकात की। इस मुलाकात में माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र, माननीय सदस्य श्री पी एन राय, आपदा प्रबंधन विभाग के विशेष सचिव श्री रामचंद्रुडु, प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार, विभाग के ओएसडी श्री अविनाश कुमार शामिल थे। माननीय मंत्री को प्राधिकरण द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों के बारे में बताया गया। राज्य भर में चल रहे भूकंपरोधी भवन निर्माण के लिए राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण, कम्युनिटी वॉलेंटियर के प्रशिक्षण, वज्रपात से बचाव के लिए चला रहे कार्यक्रम, भूकंप सुरक्षा क्लीनिक, सुरक्षित नौका परिचालन के लिए राज्य के छह हजार नाविकों के प्रशिक्षण, सड़क सुरक्षा के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रम, बी.एस.टी.एन. पर उपलब्ध सामग्रियों के उपयोग और पौधरोपन के लिए अपनाई गई अकिरा मियावाकी पद्धति आदि की जानकारियां उन्हें दी गई।

इससे पूर्व 22 अगस्त, 2022 को माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र, माननीय सदस्यद्वय श्री पी एन राय और मनीष कुमार वर्मा ने माननीय मंत्री, कृषि श्री सुधाकर सिंह से विकास भवन स्थित विभागीय कार्यालय में मुलाकात की और प्राधिकरण की ओर से चलाए जा रहे कौशल विकास व क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का शिष्टमंडल माननीय कृषि मंत्री से शिष्टाचार मुलाकात के दौरान।

कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्हें बताया गया कि राज्य में भूकंपरोधी भवन निर्माण के लिए राजमिस्त्रियों और अभियंताओं का प्रशिक्षण, भवनों की रेट्रोफिटिंग आदि कार्य किए जा रहे हैं। कम्युनिटी वॉलेंटियर व जीविका दीदियों का प्रशिक्षण, सड़क सुरक्षा, डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम के लिए सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम, मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम, अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम के तहत अब तक हुए 5709 अस्पतालों के निरीक्षण के साथ माननीय मंत्री के क्षेत्र में भूकंप सुरक्षा क्लीनिक की स्थापना से संबंधित जानकारी उन्हें दी गयी। माननीय मंत्री को आपदाओं से बचाव के लिए सेंडई, जापान में लिये गए वैश्विक निर्णय और देश में सबसे पहले बिहार सरकार द्वारा इसके लिए रोडमैप बनाने की जानकारी दी गई। रोडमैप में उल्लिखित कृषि विभाग की जिम्मेवारियों के बारे में उन्हें बताया गया। प्राधिकरण के बैनर तले दिव्यांग बच्चों और इनके शिक्षक/प्रशिक्षक के लिए तैयार किए जा रहे प्रशिक्षण मॉडयूल और मॉकड्रिल के बारे में विस्तार से मंत्री महोदय को जानकारी दी गई।

"इनसे मिलिए" कार्यक्रम में चार्टर्ड अकाउंटेंट और आर्ट ऑफ लिविंग की प्रशिक्षक प्रीति भटनागर ने रखी अपनी बात। इस कार्यक्रम में समाज की प्रमुख और प्रेरक हस्तियों से प्राधिकरण के कर्मियों–पदाधिकारियों को रू–ब–रू कराया जाता है ताकि वे अपने दैनंदिन कार्य और व्यवहार में और कुशल हो सकें, प्रभाव छोड़ सकें। समाज निर्माण में सार्थक–सकारात्मक योगदान कर सकें।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना....

पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट, समाजसेविका, लेखिका और आर्ट ऑफ लिविंग की प्रशिक्षक प्रीति भटनागर 29 अगस्त को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के आमंत्रण पर "इनसे मिलिए" कार्यक्रम में, बतौर मुख्य वक्ता, शामिल हुईं। यहां के कर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने जीवन में खुश और तनावरहित रहने के गुर बताये। साथ ही उन्होंने बेहद सफल और संतुष्ट निजी जीवन के अनुभवों के आधार पर जीवन जीने की कला बतायी। उन्होंने कहा कि घर और परिवार हमारी पहली पाठशाला हैं। रिश्ते बहुत अहम हैं। इनका मोल समझिए। सम्मान कीजिए। बच्चों पर विश्वास करिए। उन्हें अपने तरीके से जीने की आजादी दीजिए। व्यर्थ चिंता या तनाव मत पालिए। हर परिस्थिति में अच्छाई तलाशने की कोशिश करिए। कभी–कभी हमें जो लगता है कि यह ठीक नहीं, उसमें भी कुछ अच्छा निहित होता है। जीवन में कुछ अनुचित हो ही नहीं सकता। इस विश्वास को मजबूत बनाएं कि ईश्वर हमेशा आपके साथ खड़े हैं। सुश्री भटनागर ने कहा कि कोई भी धर्म हमें कभी भी कट्टरता या आपस में बैर करना नहीं सिखाता। पूजा–इबादत की पद्धतियां भले अलग–अलग हो सकती हैं, लेकिन सभी धर्मों के आदर्श–मान्यताएं तो एक ही हैं।

मैं लंबे समय तक कॉरपोरेट जगत से जुड़ी रही हूं। 16–16 घंटे मैंने भी काम किए हैं। लेकिन हमेशा हंसते–खेलते। खुश रहते हुए, चेहरे पर कोई तनाव नहीं। कैसा तनाव! जो करना है, बस करते जाओ। हां, जब काम ज्यादा होता था, तो योग और ध्यान भी ज्यादा करती थी। मेरे साथ काम करनेवाले युवा आज भी मुझे फोन करते हैं कि मैडम आप इतने तनाव के बीच भी कैसे खुश रहती थीं। हंसती रहती थीं।

घरवालों का पूरा समर्थन

.....मेहमान को जानिए.....

सुश्री प्रीति भटनागर का जन्म मुंबई के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनके पिता व्यवसायी थे। तीन बहनों में प्रीति मंझली हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मुंबई के प्रतिष्ठित नारसी मोन्जी स्कूल में हुई। महज 20 साल की उम्र में ही इन्होंने बीकॉम और चार्टर्ड अकाउंटेंसी दोनों ही परीक्षाएं एक साथ पास की। कॉरपोरेट जगत में इनका लंबा अनुभव रहा है। आप दो बच्चों की मां हैं। उनके दोनों बच्चे आज अमेरिका में सेटल हैं। आर्ट ऑफ लिविंग की प्रशिक्षक हैं। समाज सेवा में भी इनकी गहरी रूचि है।

बचपन की यादें साझा करते हुए सुश्री भटनागर ने कहा कि हर व्यक्ति को उसके हिसाब से जीने की छूट दे दें तो इससे बढ़िया कोई और गिफ्ट उसके लिए हो नहीं सकता। मुझे घरवालों से पूरा समर्थन मिला। चाहे, मेरे माता–पिता हों या मेरी पति, मैंने जीवन में जो चाहा मुझे करने की आजादी मिली। वर्ष–2008 में जब बच्चे बड़े हो रहे थे, मैंने अपनी मर्जी से नौकरी छोड़ दी। कोई तनाव नहीं था मुझे काम का या दफ्तर का। उस वक्त मुझे 36 लाख रुपए सालाना मिलते थे। एक बार भी मेरे पति ने मना नहीं किया, क्यों छोड़ रही हो इतनी अच्छी नौकरी? इसी तरह माता–पिता ने कभी भी हमें लड़के से कम नहीं समझा। हम तीन बहने ही हैं और इस नाते परवरिश भी बिल्कुल हमारी अलग हुई। लड़के ये कर सकते हैं, तुम लड़की हो नहीं कर सकती, यह सोच हमारे घर में नहीं थी। बस एक चीज मन में गांठ बांध दी गई कि बड़े होकर आत्मनिर्भर बनना है। अपने पैरों पर खड़े होना है। गृहस्थी भी चलानी है, तो आत्मनिर्भर पहले बनना है।

सभी धर्मों का सम्मान

सुश्री भटनागर की राय में मानवीय गुणों से भरपूर हमें सबसे पहले अच्छा मनुष्य बनना होगा। सभी मत और धर्मों का सम्मान करना होगा। मेरी स्वर्गीय सास ईसाई धर्म को मानती थीं। मेरे ससुर हिंदू और मैं खुद दिगंबर जैन परिवार से थी। लेकिन कभी किसी भी चीज में धर्म हमारे आड़े नहीं आया। हम सारे पर्व–त्यौहार मिलकर मनाते हैं। धर्म को लेकर आज इतनी सारी बातें होती हैं। आए दिन हमें कट्टरता की हदें टूटती नजर आती है। लेकिन कोई भी धर्म कभी आपस में लड़ना नहीं सिखाता। सभी धर्मों के आदर्श (वैल्यूज) एक ही हैं। हां, इबादत–पूजा की पद्धतियां सब में अलग–अलग हो सकती हैं। इसी तरह मैं खुद शाकाहारी, मेरे पति मांसाहारी लेकिन यह पसंद भी कभी टकराव की वजह नहीं बना। सामंजस्य भी जीवन में जरूरी है।

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा

कामयाबी के मंत्र बताते हुए उन्होने कहा कि जीवन में सफल होने के दो बुनियादी स्तंभ हैं– ईमानदारी और सत्यनिष्ठा। इसके बगैर आप जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते। गलतियों को निःसंकोच स्वीकार करें। अपने जीवन का एक किस्सा याद करते हुए उन्होंने कहा–एक बार मेरी गलती की वजह से मैं जहां काम करती थी उस कंपनी को ज्यादा टैक्स देने पड़ गए। बाद में मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ। मैंने फौरन अपने बॉस को बताया। उन्होंने इस मसले को बहुत अच्छे से संभाला। कहीं यह बात उजागर नहीं होने दी कि मेरी गलती की वजह से ऐसा हो गया है और जो अतिरिक्त टैक्स हमलोगों की कंपनी ने जमा करवा दिया था, उसे भी वापस लाने में वे सफल रहे।

गलतियों से सीखें :

सुश्री भटनागर ने कहा कि हम सभी अपने जीवन से सीखते हैं। गलतियों से सीखते हैं। अगर वही पुरानी गलती आप दोहरा रहे हैं, तो इसका मतलब उस गलती से आपने कुछ नहीं सीखा। आप अपने जीवन से क्या सीखा, अगर लिखना शुरू करें तो यह भी किसी नॉवेल से कम नहीं होगा। सभी करते हैं। मैंने भी अपने जीवन में कई गलतियां की है।

:: संबोधन की मुख्य बातें ::

- गुरु व्यक्ति नहीं शक्ति हैं, गुरु सर्वव्यापी हैं
- सफलता की पहली कसौटी, अच्छा मनुष्य बनना
- ईमानदारी और सत्यनिष्ठा सबसे अहम्
- लड़कियां किसी मायने में लड़कों से कम नहीं
- बेहिचक अपनी गलतियां स्वीकारें
- बड़ों के विश्वास का मान रखें
- निश्चय हमेशा दृढ़ होने चाहिए
- जीवन में आत्मसम्मान बहुत जरूरी
- मायने रखता है आपका व्यवहार
- अपनी मर्जी बच्चों पर कभी न थोपिए
- दूसरों की आजादी का सम्मान करिए

आपदा प्रबंधन की पुख्ता तैयारियों से लैस होंगे जिले

आपदाओं से लड़ने की अब जिला स्तर पर ही मुकम्मल तैयारी हो रही है। राज्य के विभिन्न जिलों

की आपदा प्रबंधन योजनाओं को प्राधिकरण के स्तर पर अंतिम रूप देने का कार्य प्रगति पर है। योजना को अद्यतन करने हेतु जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, खगड़िया, बेगूसराय एवं बांका जिलों के संबन्धित विभागों से विमर्श किया गया तथा जिले से अनुशंसा के पश्चात प्राधिकरण को शीघ्र भेजने का अनुरोध किया गया। इसी तरह पूर्वी बिहार व सीमांचल के विभिन्न जिलों की जिला आपदा प्रबंधन योजनाओं (डीडीएमपी) को आवश्यक संशोधन कर अंतिम रूप देने हेतु जिला पदाधिकारी एवं अन्य संबंधित पदाधिकारियों के साथ बैठकों का आयोजन किया गया। गोपालगंज, सिवान, सारण, जहानाबाद, लखीसराय व जमुई जिलों के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समन्वय कर इसे अद्यतन करने का कार्य किया गया है। जल्द ही इसे अंतिम रूप दे दिया जाएगा। मुजफ्फरपुर जिला व सीतामढ़ी जिला में डीडीएमपी में आवश्यक परिवर्तन हेतु वार्ता चल रही है और उन्हें सुझावों से अवगत कराया गया है। शिवहर और प चम्पारण जिलों के डीडीएमपी में आवश्यक संशोधन हेतु सुझाव तैयार कर लिये गये हैं और इन्हें जिलों को भेजा जा रहा है। बैठकों में प्राधिकरण के द्वारा योजना को अद्यतन करने हेतु जिलों को उपलब्ध कराये गये सुझावों के विभिन्न बिन्दुओं को समायोजन पर चर्चा की गई। साथ ही जिला आपदा प्रबंधन योजना के महत्व एवं आवश्यकता के बारे में प्रस्तुतिकरण के माध्यम से जानकारी दी गयी। गोपालगंज, सिवान, सारण, जहानाबाद, लखीसराय और जमुई जिले के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समन्वय कर इसे अद्यतन करने का कार्य किया गया है। जल्द ही इसे अंतिम रूप दे दिया जाएगा।

एक नजर में अगस्त माह में हुए कार्यक्रमों की झलक

1. बच्चे सीख रहे तैराकी के गुर

राज्य में डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम एवं उनमें कमी लाने के उद्देश्य से सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के अंतर्गत गया जिले के फतेहपुर, वजीरगंज एवं टनकुप्पा प्रखण्डों में जिला प्रशासन द्वारा चिन्हित प्रशिक्षण स्थलों पर 06 से 18 आयु वर्ग के छात्र/छात्राओं (बालक/बालिकाओं) का प्रशिक्षण जुलाई माह, 2022 में संचालित किया गया। उक्त प्रशिक्षण का क्रियान्वयन संबंधित जिला प्रशासन द्वारा NINI, पटना में प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स के सहयोग से सम्पन्न हुआ। अगस्त माह 2022 गया जिले के फतेहपुर प्रखण्ड में कुल 30 बालकों को तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रकार अभी तक कुल 1138 + 84 = 1222 बालक/बालिकाओं को तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

2. एन.सी.सी. कैडेट सड़क सुरक्षा के उपाय व प्राथमिक उपचार की ले रहे जानकारी

प्राधिकरण द्वारा एन.सी.सी. उड़ान, एस0डी0आर0एफ0 एवं एम्स, पटना के सहयोग से एन.सी.सी. के कैडेट्स का राज्य के विभिन्न जिलों में आयोजित किए गए शिविर में सड़क सुरक्षा के उपायों, प्राथमिक उपचार एवं अन्य प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदाओं के बारे में जागरूकता/संवेदीकरण एवं मॉकड्रिल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके अन्तर्गत सड़क सुरक्षा जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार हेतु सड़क दुर्घटनाओं संबंधी विडियो क्लिप्स (क्या करें, क्या नहीं करें) का प्रदर्शन, अस्पताल पूर्व चिकित्सा विषय पर प्रशिक्षण तथा एस.डी.आर.एफ. के द्वारा विभिन्न आपदाओं से बचाव के संबंध में मॉकड्रिल कराया गया। यह कार्यक्रम अगस्त माह 2022 में पटना, बरौनी, बोधगया व दलसिंहसराय में आयोजित किया गया।

3. युगांतर के युवा सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण

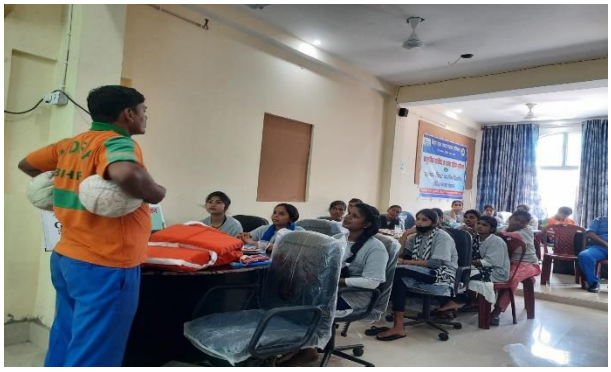

बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः हमारे गाँव, पंचायतों, प्रखण्ड एवं जिलों में विभिन्न तरह की आपदाएँ आती रहती हैं। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें तो वे अपने गाँव, पंचायत, प्रखंड एवं जिले को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य से पटना जिले के राजेंद्र नगर एवं कंकड़बाग क्षेत्र में कार्यरत युगान्तर संस्था के युवा वॉलंटियरों का तीन दिवसीय प्राशिक्षण दिनांक 24/08/2022 से 26/08/2022 को संपन्न हुआ। प्रथम बैच में कुल 30 नवयुवतियों को विभिन्न आपदाओं से बचाव व रोकथाम के उपायों के संदर्भ में प्रशिक्षित किया गया है।

4. भूकंप से बचाव की दी जानकारी

भूकंप के लिहाज से पूर्वी चंपारण जिला काफी संवेदनशील माना जाता है। भूकंप से बचाव और सुरक्षा के साथ–साथ भवनों के निर्माण में भूकंपरोधी तकनीक के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण लगातार प्रयत्नशील है। 26 अगस्त को मोतिहारी में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और रेडक्रॉस सोसायटी के सहयोग से जागरूकता का एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न संस्थाओं के लगभग 400 प्रतिनिधियों ने इसमें हिस्सा लिया।

इस जागरूकता कार्यशाला का उद्घाटन जिलाधिकारी शीर्षत कपिल अशोक ने किया। कार्यशाला में प्राधिकरण की ओर से सलाहकार (तकनीक) डॉ बीके सहाय और परियोजना पदाधिकारी प्रवीण कुमार ने अपने विचार रखे। प्रशिक्षण शिविर का संचालन महेश प्रसाद सिन्हा ने किया।

दशहरा/दुर्गापूजा के अवसर पर सुरक्षा हेतु जरूरी सलाह (Advisory)
दशहरा/दुर्गा पूजा के अवसर पर पूजा पंडालों, दशहरा मेला एवं रावण वध के अवसर पर बच्चों, महिलाओं, युवकों एवं वृद्धों को भारी भीड़ इकठ्ठी होती है। ऐसे में भीड़ प्रबंधन करना प्रशासन के लिए चुनौती भरा काम हो जाता है, परंतु यदि हम सभी अपनी सुरक्षा के प्रति सजग रहें तथा भीड़ प्रबंधन हेतु प्रशासन के निर्देशों का पालन करें तो हम निर्विघ्न रूप से इस महान पर्व का आनन्द ले सकते हैं। आइए हम निम्न सलाह पर अमल कर दशहरा एवं दुर्गा पूजा के अवसर पर स्वयं तथा अपने शहर/गाँव को आपदा मुक्त रखें:
जिला प्रशासन
क्या करें
पूजा पंडालों/दशहरा मेले में आगमन एवं निकास की समुचित व्यवस्था (पुरूष एवं महिलाओं के लिए अलग–अलग) यथा बैरिकेडिंग की व्यवस्था
चिकित्सा दल एवं एम्बुलेंस की पर्याप्त व्यवस्था।
बिजली के तारों एवं उपकरणों में सुरक्षा के पूर्ण उपायों की व्यवस्था।
पार्किंग की समुचित एवं सुचारू व्यवस्था।
विसर्जन में प्रयुक्त नावों में सुरक्षा संबंधी उपाय एवं गोताखोरों की व्यवस्था।
भीड़ नियंत्रण के लिए नियंत्रण कक्ष की स्थापना/लाउडस्पीकर से लगातार आवश्यक सूचनाओं की घोषणा।
मूर्तियों के विसर्जन हेतु घाटों एवं स्थलों को चिह्नित कर लिया जाय।
आग से बचाव की समुचित व्यवस्था।
समुचित रोशनी की व्यवस्था।
विसर्जन क्रमबद्ध रूप से कराया जाय।
पूजा पंडालों/मेला या विसर्जन स्थलों पर पटाखा आदि का इस्तेमाल न हो।
क्या न करें
भीड़ को एक जगह एकत्रित न होने दें।
एक ही ओर से भीड़ को आने और जाने न दिया जाय।
किसी भी प्रकार की अफवाह न फैलने दिया जाय।
बिजली के तारों एवं उपकरणों के पास लोगों को न जाने दें।
किसी भी प्रकार की अराजकता न फैलने दिया जाय।
मूर्ति विसर्जन के समय नावों में निर्धारित/लदान क्षमता से ज्यादा लोगों को न बैठने दिया जाय।
सामान्य नागरिक
क्या करें
पूजा पंडालों/मेले में चलते–फिरते रहें, अनावश्यक रूप से एक स्थल पर भीड़ न लगाएं।
यदि आप छोटे बच्चों, महिलाओं, बीमारों या वृद्धों को मेले में लेकर जा रहे हैं तो उनके जेब में (या गले में लॉकेट की तरह) घर का पता और फोन नंबर आवश्य रख दें।
यदि आप परिवार या समूह के साथ हैं तो किसी आपात स्थिति में मेला क्षेत्र के बाहर मिलने का एक स्थान सुनिश्चित कर लें। एक दूसरे का फोन नंबर साथ रखें।
भगदड़ के समय संयम पूर्ण व्यवहार करें और घबराएं नहीं।
किसी भी आपात स्थिति में तत्काल नियंत्रण कक्ष में संपर्क करें।
अपने बहुमूल्य समानों की रक्षा स्वयं करें।
बिजली के तारों और उपकरणों से दूर रहें।
प्रशासन की ओर से की जाने वाली घोषणाओं को ध्यान से सुनें और उसके अनुसार व्यवहार करें।
क्या न करें
किसी प्रकार की अफवाह न फैलाएं और न ही उन पर ध्यान दें।
मेले में साथ लाये बच्चों को अकेला न छोड़े न ही उन्हें इधर–उधर जाने दें।
दुर्गा पूजा के मूर्ति विसर्जन में तैराकी न जानने वाले पानी के भीतर न जाएं।
मेले में किसी भी प्रकार के पटाखे/ज्वलनशील पदार्थ न ले जाएं तथा धूम्रपान न करें।
मेले में किसी भी प्रकार की अराजकता न फैलाएं।
कोविड से बचाव संबंधी सावधानियाँ
1. कोविड–19 संक्रमण से बचाव संबंधी प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए मास्क लगाएँ, सामाजिक दूरी बनाये रखें एवं हाथों को साबुन से बार–बार धोएं।
2. सर्दी–खांसी, बुखार, एन्टी एलर्जी संबंधी दवाएँ एवं कोविड–19 संक्रमण से संबंधी सामान्य दवाओं का भी संग्रहण अवश्य कर लें।
3. कोविड–19 के दृष्टिगत सेनेटाईजर/साबुन एवं पल्स ऑक्सीमीटर भी साथ रखें।
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)
द्वितीय तल, पंत भवन, नेहरू पथ (बेली रोड), पटना–800001, फोन: (0612) 2522032, फैक्स: (0612) 2547311
Visit us: www.bsdma.org; e-mail:info@bsdma.org अन्य उपयोगी फोन नं0, राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र (SEOC)- (0612) 2294204/205
आपदा नहीं हो भारी यदि पूरी हो तैयारी ॥